

Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- dhabeerparasad@gmail.com

DEFINITION OF LEARNING

अधिगम या सीखना एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यवहार परिवर्तन के रूप में व्यक्ति या प्राणी ज्ञान अर्जन करता है। इस व्यवहार परिवर्तन के रूप में व्यक्ति या प्राणी का ज्ञान-अर्जन अपेक्षाकृत स्थायी होता है और इसके लिए अभ्यास या अनुभव आवश्यक होता है। अतः अधिगम या सीखना के इन मूल तत्वों अर्थात् व्यवहार परिवर्तन, ज्ञान अर्जन, अपेक्षाकृत स्थायित्व तथा अभ्यास को ध्यान में रखते हुए अनेक मनोवैज्ञानिकों ने इसकी परिभाषा दी है, जिनमें **रोबिन्स** ने इसे परिभाषित

करते हुए कहा है कि –“ अधिगम का तात्पर्य अनुभव के कारण व्यवहार में होने वाला अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन से है।“

यह परिभाषा अधिगम या सीखना के स्वरूप को स्पष्ट करने में सक्षम है। इस परिभाषा के विश्लेषण से अधिगम या सीखना के स्वरूप के संबंध में निम्नलिखित संधटकों ,तत्वों या विचार-बिन्दुओं का पता चलता है, जिनसे अधिकांश अधिगम सिद्धांती सहमत हैं :-

1. अधिगम या सीखना अपेक्षाकृत स्थायी होता है-

सीखना का एक आवश्यक संधटक या विशेषता अपेक्षाकृत टिकाऊ होना है। हमारे व्यवहार के ऐसा परिवर्तन जो अपेक्षाकृत टिकाऊ होता है, उसे सीखना कहते हैं

2. अधिगम या सीखना एक संभावित अन्तर्निहित व्यवहार है -

कुछ व्यवहार के परिवर्तन ऐसे होते हैं, जिनकी अभिव्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से निष्पादन में नहीं

होती है। फिर भी व्यवहार के ऐसे परिवर्तन भी सीखना या अधिगम कहलाते हैं।

3. सीखना प्रबलित होता है :-

सीखने का यह संधटक या विशेषता वास्तव में एक मुख्य बिंदु है। सीखने को विलोपन से बचाने के लिए प्रबलन आवश्यक है। अधिकांश व्यवहारवादी इस विचार से सहमत हैं, यद्यपि संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक इसे बहुत आवश्यक नहीं समझते हैं।

4. सीखना अभ्यास या अनुभव का परिणाम होता है -

हमारे व्यवहार का वह परिवर्तन जो अभ्यास या अनुभव के कारण उत्पन्न होता है, वही सीखना है। इस आधार पर परिपक्वता अथवा बीमारी के कारण व्यवहार में होने वाले परिवर्तन सीखना की परिधि से स्वतः बाहर हो जाते हैं ।